Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VIII, Issue No. XVI, October-2014, ISSN 2230-7540

विकेश निझावन : जीवन और साहित्य

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VIII, Issue No. XVI, October-2014, ISSN 2230-7540

विकेश निझावन : जीवन और साहित्य

Dr. Sonia Rana*

Assistant Professor

संक्षेपण – विकेश जी ने हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी पूरी साहित्यिक निष्ठा, गंभीरता, सूक्ष्मता एवं तन्मयता से चलाई है व अमूल्य कृतियों का प्रणयन कर अपनी क्षमता का परिचय दिया है। अतः शोधकर्त्री डॉ. सोनिया ने पाया कि हिन्दी साहित्य की अनेक जटिल एवं अबूझ गुत्थियों को समझने और समझाने में विकेश की भूमिका असंदिग्ध है। दुबले–पुतले, भोली–भाली शख्सियत के व्यक्ति विकेश–निझावन को देखकर कतई अहसास नहीं होता कि इनके भीतर कोई रचनाकार बड़ी ताकत के साथ जोर मार रहा है, छटपटा रहा है, बाहर निकल कर अपनी टीस, त्रासदी को उगलने के लिए वह जैसे उंगलियों से इशारे करके परिवार को, हर घर को उसके भीतर द्वन्द्व और तनाव की कहानियॉ सुनाते है।

विकेश की साहित्य–मनीषा के कई रंग है उनके कवि, उपन्यासकार, सम्पादक, कहानीकार के अपने–अपने रंग है, किन्तु सबसे चटकदार रंग है उनके कथाकार का एक आदर्श अध्यापक और आदर्श लेखक के रूप में उनकी मनीषा के रंग भी कम उज्ज्वल नहीं है। तिस पर उदात्त चरित्र और सहज मानवीयता की अपनी खुशबू है।

----------♦----------

विकेश निझावन हरियाणा हिन्दी जगत के ऐसे लब्ध – प्रतिष्ठ कथाकार है, जिन्होंने हिन्दी कथा–साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है। विकेश बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न विद्वान, सुप्रतिष्ठित साहित्यकार सहृदय तथा सच्चे इंसान है। वे उन साहित्याकारों में से है, जिनकी सांस–सांस साहित्य को समर्पित हो जाती है। हिन्दी के अलावा पंजाबी तथा अँग्रेजी भाषा तथा साहित्य का तो इन्होंने गहन, सूक्ष्म एवं सर्वांगीण अध्ययन–मनन, विवेचन–विश्लेषण किया है। विकेश निझावन की रचनाओं को पढ़ना एक सुखद और ताजगी भरा अनुभव देता है। व्यक्ति की भावनाओं और संवेदनाओं का बहुत ही सहज चित्रण किया है। इनमें यथार्थ के धरातल पर सत्य की खोज है इनकी रचनाएँ इनकी कहानियों की प्रवाहमयता, छोटे–छोटे चुस्त संवाद, पात्र का निर्वाह और विशेषकर कहानियों का अन्त विकेश के बाह्य और भीतरी अनुभव से परिचित कराते हुए उन्हें एक सशक्त कथाकार के रूप में हमारे सामने ला खड़ा करता है।

एक साहित्यकार के रूप में विकेश जी की प्रतिभा बहुमुखी है। उन्होंने 12–13 वर्ष की आयु में जब वे सातवीं कक्षा में थे तभी से कविता लिखना आरम्भ किया। 10वीं कक्षा में इन्होंने सर्वप्रथम 'विदा' कहानी लिखी जो 'वीर प्रताप' पत्रिका में प्रकाशित हुई। 1973 में 'जाने और लौट आने के बीच' कहानी 'सारिका' पत्रिका में छपी। यह कहानी इतनी प्रसिद्ध हुई कि इसका अनुवाद अंग्रेजी, गुजराती, मलयालम, तेलगू, पंजाबी और उर्दू भाषाओं में हुआ है। इन्होंने दस कहानी–संग्रह 'हर छत का अपना दुःख, अब दिन नहीं निकेलगा, महादान, 'महासागर, 'आखिरी पड़ाव व अन्य कहानियॉ, मेरी चुनिन्दा कहानियॉ, गठरी, कोई एक कोना, मेरी इकत्तीस कहानियॉ, कथा–पर्व का सृजन किया है। चार काव्य–संग्रह 'एक खामोश विद्रोह', मेरी कोख का पांडव, एक टुकड़ा आकाश, शेष को मत देखो, के माध्यम से काव्य–जगत में अपनी श्रेष्ठता निर्धारित की है। इनके द्वारा उपन्यास जगत में 'मुख़्तारनामा व कोकून (अप्रकाशित) नामक दो मोतियों को सजाया गया है। जिसमें 'मुख़्तारनामा' सर्वाधिक चर्चित उपन्यासों में गिना जाता है। इनका 'दुपट्टा' लघुकथा – संग्रह काफी चर्चा में रहा है। इन्होंने 'कितनी आवाजें' लघुकथा–संग्रह का सम्पादन किया है 'बाल–साहित्य' जगत में 'प्यारा–बचपन' (भाग–2), बचपन के गीत (भाग–2) नामक पुस्तकों की संरचना विकेश जी के द्वारा की गयी है। इनका व्यक्तित्व व्यक्त करते हुए ऑखों के सामने सरल, सीधी, मंद – मंद मधुर भाषी, दुबला – पतला किन्तु अर्न्तमन से छटपटाता ऐसा व्यक्ति उभर कर आता है। जो हमारे बिखरे हुए मानवीय मूल्यों कें प्रति अपनी व्यथा और आक्रोश निरन्तर अपनी कहानियों के माध्यम से व्यक्त करता है।

विकेश जी ने आधुनिक संवेदना से प्रभावित होकर अपनी कहानियों के काव्य में विभिन्न प्रकार की मानवीय कुंण्ठाओं, संत्रास, सामाजिक यथार्थ मध्यवर्गीय जीवन और मानवीय सम्बन्धों आदि को स्थान देकर कहानी के कथ्य में विविधता का समावेश किया है। इस प्रकार समसामयिक मानसिकता के हर तेवर को अभिव्यक्ति देने में ये कहानियॉ सर्वथा समर्थ है। ये उस प्रकार सामने लाती है। जिसमें जिन्दगी की पहचान अधिक गहरी और निकटतर होती है। कहानियों का परिवेश यथार्थ जमीन पर पला है। विकेश की मध्यवर्गीय जीवन के सम्बंधित पारिवारिक बिखराव, नारी–चित्रण, भोगा हुआ यथार्थ, पीढ़ी–संघर्ष, प्रेम–चित्रण, दाम्पत्य संबंध, नारी की मनोव्यथा, दहेज प्रथा, वर्ग संघर्ष, सामाजिक यथार्थ, नवीन मूल्य, मनोवैज्ञानिक चित्रण के अन्तर्गत यौन – भावना, अकेलापन, घुटन, संत्रास, मृत्यु बोध व आधुनिक संवेदना इत्यादि की प्रवृत्तियों को दर्शाया है।

विकेश जी ने अपने युग के यथार्थ को बड़ी सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी के साथ चित्रित किया है। यद्यपि उनके काव्य – सृजन की यात्रा उनके बचपन से ही आरम्भ हो गयी, तथापि

उन्होनें प्रथम काव्य – संग्रह 'एक खामोश विद्रोह' का सृजन 1983 में किया। तत्पश्चात् 'मेरी कोख का पाण्डव' (1987) 'एक टुकड़ा आकाश (1986), शेष को मत देखो (2003) में किया। उनकी कविताओं में शोषित समाज की शुर्तमुर्गी पलायनवादी मनोवृति पर चोट कर उसकी संघर्ष चेतना को उद्धेलित किया गया है। उनका लेखन यथार्थ को सामाजिक प्रवाह से काटकर आशक्त और स्थिर रूप में फ्रेम में जड़ी तस्वीर को कील पर टांग देता, बल्कि यथार्थ की संघर्ष चेतना में शामिल करने का कलात्मक प्रयत्न करता है। उनकी काव्य रचनाएँ यथार्थ को ऐतिहासिक विवेक से जोड़कर समकालीन मानवीय स्थिति के अहसास को प्रांसगिक और गहरा बनाती है। वे अपने समय का साक्ष्य होने के साथ अपने समय में हिस्सा लेती है, जूझती उलझती है और इस तरह अपने अनुभव को एक सर्जनात्मक सार्थकता तक ले जाती है। विकेश की कविताएँ मानवीय संवेदनाओं का सार्थक कोलाज़ हैं। विकेश की कविताएँ मौन को स्वर देती हैं। ये कविताएँ अपने परिवेश से प्रभावित होती हैं। यह प्रभाव घर से पैदा होकर महानगर तक फैलता है।

विकेश जी ने 'मुख्तारनामा' उपन्यास में भारतीय न्यायिक व्यवस्था, कोर्ट – कचहरी में विलम्ब से होने वाले निर्णय एवं समाज में फैली बुराईयों का अद्भूत चित्रण किया है। मनुष्य को अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाना चाहिए। इसकी अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति की है। विकेश ने 'कोकून' उपन्यास के माध्यम से कुछ प्रश्न उठाए हैं। जैसे इन्सान जीवन में क्या देकर जाता है? एक दूसरा प्रश्न उपन्यास में यह उठता है। कि इन्सान सुरक्षित होते हुए भी असुरक्षित होने का बोझ क्यों लिए चलता है ।

विकेश जी ने पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों को लेकर अत्यन्त संवेदनशील लघुकथाएँ प्रस्तुत की हैं। 'दुपट्टा' लघुकथा संग्रह की अधिकांश लघुकथाओं में सम्बंधों के खोखलेपन को दर्शाया है। सामाजिक विसंगतियों पर तीखा प्रहार करने वाली लघु कथाएँ भी इस संग्रह में अपनी विशिष्टता लिए हुए है।

लघुकथा ने अपनी सामर्थ्य को गहराई से अंकित किया है। यह अब किसी गहन तत्व को समझने, उपदेश, देने स्तब्ध करने, गुदगुदाने और चौंकाने का काम ही नहीं करती, बल्कि आज के यथार्थ से जुड़कर हमारे चिन्तन को धार देती है। लघुकथा का महत्त्व 'गागर में सागर' और सतसईया के दोहरे 'जैसे देखने में छोटे लगे घाव करें अति गंभीर' की भॉति ही है। अपनी निजता के प्रति जो स्थितियॉ हमें कसोटती हैं, उन्हें कम से कम समय और कम से कम शब्दों में सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करना ही एक सशक्त लघुकथा को जन्म देना है लघुकथा कहानी परिवार ही विधा है। आज का मौलिक व्यक्तित्व नकारा नहीं जा सकता। अब लघुकथा एक स्वतंत्र गद्य विधा है, क्रांतिकारी आयाम है और एक नवीन साहित्यक मोड़ , पुराने बीज को नई धरती मिल गई है अति अल्प समय में और सीमित शब्दों में लघुकथा मानवीय संवेदना को झकझोरने का सामर्थ्य रखती है।

विकेश जी ने बाल गीतों की रचना शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्द्धन के उद्देश्य से की है। विकेश जी ने बच्चों से अधिक लगाव रखने के कारण उन्हें खेल से सम्बंधित, पशु – पक्षियों से सम्बंधित, प्रकृति से सम्बंधित प्रकृति से सम्बंधित वस्तुओं जैसे पानी कैसे बनता है। पेड़ – पौधों, पाठयक्रम से सम्बंधित ज्ञान में वृद्धि करने के लिए बालगीतों को माध्यम बनाया है। इनके बाल गीत–संग्रह 'बचपन के गीत (भाग 1–2) प्यारा बचपन भाग (1–2), फ्यूचर किड्स से प्रकाशित हुए है, जो कि भारत में प्रचलित अनेक स्कूलों में पढ़ाए जाते है इनकी कविताएँ बच्चों को प्रेरणा देती हुई उनके मानसिक और बाल व्यक्तित्व का विकास करती है।

विकेश जी ने उपन्यास, कहानी, कविता, लघुकथा, बाल–साहित्य लगभग सभी विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। इनका भाषा–सौष्ठव बहुत ही उत्तम श्रेणी का है शब्द भंडार के अन्तर्गत इन्होनें तत्सम, तद्भव, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी इत्यादि के शब्दों, अलंकार के अन्तर्गत उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, श्लेष अलंकारों, प्रतीकों, शैली के अंतर्गत विवेचनात्मक, विवरणात्मक, चित्रात्मक, फ्लैशबैक शैली, आत्मकथात्मक शैली को आधार बनाकर विवेचन किया है। निझावन की भाषा सहज होते हुए भी प्रभावोत्पादक और सधी हुई है, जिसे स्थानीय प्रयोगों में और सक्षम बनाया है । इस प्रकार सामान्य स्थितियों को भाषा के माध्यम से निझावन ने सटीक रूप में प्रस्तुत किया है ।

आम बोलचाल की भाषा के प्रयोग और सपाट बयानी से विकेश निझावन अपनी रचनाओं के कथ्य को पुरअसर तरीके से उभारने में सफल रहे हैं। गत दो दशक के उतरार्द्ध में इसी कारण यह कहानीकार साहित्य जगत व पाठकों का ध्यान आकर्षित कर पाया था। उसने शिल्प के पीछे न पड़कर अपनी रचनाओं के कथ्य–पक्ष को दूसरा दर्जा देने से बचा लिया। क्योंकि उसने 'आरोपित' भाषा के प्रयोग के मोह को त्याग कर पाठकों के बड़े वर्ग पर उपकार किया है।

हृदय स्पर्श करती विकेश विज्ञावन की कहानियॉ कथ्य व शिल्प की दृष्टि से अत्यंत सशक्त है। प्रवाहमयता कहानियों का विशेष गुण है छोटे–छोटे चुस्त संवाद प्रभावपूर्ण होते है, संवेदनशीलता इनकी कहानियों की आत्मा है।

सहायक ग्रन्थ सूची

ब्रजमोहन शर्मा, समकालीन कविता और लीलाघर जंगूड़ी, नालन्दा नई, दिल्ली, 1993.

मदन गुलाटी, समकालीन कविता का : परिप्रेक्ष्य, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 1981.

महावीर वत्स, साठोत्तरी कविता में सांस्कृतिक चेतना, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 1996.

डॉ. मधुलता सिंह, हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली.

मोहनी शर्मा, हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर.

Corresponding Author

Dr. Sonia Rana*

Assistant Professor

E-Mail – satishkumarrana@hotmail.com